- पौधों को छायादार स्थान पर सुखाना चाहिए और फिर उनका बंद डिब्बों में संग्रहण करना चाहिए।

पैदावार

- दो वर्षों में लगभग 3.75 टन/हेक्टेयर सूखी घास–पात के रूप में पैदावार होने का अनुमान है।

चिरायता की खेती

सामान्य नाम	:	चिरायता
वानस्पतिक नाम	:	स्वेरिता चिरायता
कुल	:	जेंटीनियेसी
उपयोगी भाग	:	पूरा पौधा
सामान्य उपयोग	:	यह कड़वा, वातहार, ज्वरनाषक, प्रति–उत्तेजक, भूखवर्धक पौधा है।

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय
भारत सरकार

कमरा न. 309, तृतीय तल, आयुष भवन, बी ब्लॉक, जी.पी.ओ. काम्पलेक्स,
आई.एन.ए., नई दिल्ली – 110023
दूरभाष : 011-24651825 | **फैक्स** : 011-24651827
ईमेल : info-nmpb@nic.in | **वैबसाईट** : www.nmpb.nic.in

नोटः– कृषि प्रौद्योगिकी का विकास सीएसकेएचपीकेवी पालम पुर हिमाचल प्रदेश तथा एसके विश्वविद्यालय एग्रीकलचरल साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी जम्मू तथा कश्मीर द्वारा किया गया है।

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय
भारत सरकार

चिरायता

स्वेरिता चिरायता
कुलः जेंटीनियेसी

- चिरायता एकवर्षीय/द्विवर्षीय सीधा, बहुशाखित, 1.5 मीटर लम्बा कड़वा पौधा है।
- इसका तना नीचे से बेलनाकार, तथा चार कोणीय ऊर्ध्वमुखी होता है।
- इसकी पत्तियाँ चौड़ी, भालाकार की, विपरीत और स्थानबद्ध होती हैं।

जलवायु और मिट्टीः

- यह 1200 से 1300 मीटर (समुद्र तल से) की ऊँचाई पर समशीतोष्ण क्षेत्रों में तेजी से वृद्धि करता है।
- सिंचाई सुविधा से युक्त दोमट से रेतीली मिट्टी तथा खाद से समृद्ध सूखी मिट्टी इसकी खेती के लिए उपयोगी होती है।

उगाने की सामग्रीः

- पतझड़ के मौसम में संग्रहीत बीज इसको उगाने के लिए प्रयोग में लाए जाते हैं।

नर्सरी तकनीक

पौध तैयार करनाः

- चिरायता के बीजों को 10 से 15 सेमी की दूरी पर कतारों में प्रत्यारोपित करते हैं ताकि नर्सरी में एफवाईएम, गाद और भूमि 2:2:1 अनुपात में हो ताकि बीज ठीक से अंकुरित हो सकें।
- नर्सरी में अक्टूबर महीने में 25 –28 दिनों में पौध तैयार हो जाती है।

पौध दर और पूर्व उपचारः

- 1 हेक्टेयर क्षेत्र के लिए लगभग 200 ग्राम बीजों की आवश्यकता पड़ती है।
- 90 प्रतिशत बीज अंकुरण के लिए 15 दिनों तक 3°C या उससे कम तक बीजों को ठंडा किया जाता हैं।

खेत में रोपण

भूमि की तैयारी और उर्वरक प्रयोगः

- भूमि को 2 से 3 बार हैरो से जोताई करके समतल किया जाता है।
- केंचुआ खाद को 3.75 टन प्रति हेक्टेयर की दर से और वन की घास–फूंस की खाद को 2 टन प्रतिहेक्टयर की दर से मिट्टी में मिलाया जाता है।

पौधा रोपण तथा अनुकूल दूरीः

- मार्च–अप्रैल माह के दौरान 45 सेमी. X 45 सेमी. की दूरी पर बीजों को ठीक प्रकार से प्रत्यारोपित करते हैं।
- प्रति हेक्टेयर लगभग 50,000 पौधों को खेत में प्रत्यारोपित किया जाता है।

अंतर फसल प्रणालीः

- इस पौधे को आलू के साथ भी उगाया जा सकता है।
- खुले खेतों में आलू को उठी हुई परतों में उगाया जा सकता है जबकि चिरायता को किवी औरचार्ड के निचले भाग में उगाया जा सकता है।

संवर्धन विधि और रख–रखाव पद्धतियांः

- पौधे को खरपतवार और घास से भी मुक्त रखा जाता है।

सिंचाईः

- विशेष रूप से वर्षा ऋतु में, खेत के चारों ओर नालियों की उचित तरीके से खुदाई करते हुए, सिंचाई प्रणाली सुनिश्चित की जानी चाहिए।
- जब भी इसकी जरुरत हो तो गर्मी और सर्दी वाले दिनों के दौरान एक दिन छोड़ कर खेतों की सिंचाई की जानी चाहिए।

निराईः

- मिट्टी को नरम और साफ बनाने के लिए महीने में एक बार कुदाली के साथ हाथों से निराई करनी चाहिए।

फसल प्रबंधनः

फसल पकना और कटाईः

- जैसे ही गर्मी में अथवा अक्टूबर–नवम्बर माह में कैप्सूल (फल) पकता है वैसे ही सारे पौधों को इकठ्ठा कर लिया जाता है।

कटाई पश्चात् प्रबन्धन

- सूखे हुए बीजों को हवा बंद डिब्बों या जूट के बैंगों में भंडारित किया जाता है।